Bhaskar

Indpk उपस्थारती - 2020 Exam

जनाधिक्य (Over Population) क्या है? क्या बढ़ती हुई जनसंख्या किसी देश के लिए खतरनाक होती है?

Ans:- जब जनसंख्या किसी देश की आदर्शतम बिंदु (optimum Population) से अधिक हो जाती है, तो इससे देश की प्राकृतिक साधनों पर वृद्धि की अनावश्यक भीड़ उत्पन्न हो जाती है फलस्वरूप उत्पत्ति ह्रास नियम क्रियाशील होने लगता है और साथ-साथ प्रति व्यक्ति आय घटने लगती है, जिसके फलस्वरूप उत्पादन का स्तर नीचे गिरने लगता है, देश का आर्थिक विकास अवरुद्ध हो जाता है। वास्तव में यही स्थिति जनाधिक्य की स्थिति होती है। आज भी चीन, एवं भारत में जनाधिक्य की स्थिति मौजूद है। बहुत हद तक विगत दस वर्षों से चीन एवं देश ने जनाधिक्य की स्थिति को नियंत्रित करने में सफल हुआ है परन्तु भारत में अभी भी जनसंख्या विस्फोटक (Population explosion) की स्थिति मौजूद है। भारत जैसे देशों में आज भी खाद्यान्न एवं औद्योगिक उत्पादन की अपेक्षा जनसंख्या बहुत तेजी के साथ बढ़ रही है। परिणामस्वरूप लोगों के जीवन स्तर बहुत ही निम्न है। भारत में जन्म दर (Birth rate) अन्य देशों की तुलना में बहुत अधिक है। आज सामाजिक रीति रिवाजों एवं धार्मिक विश्वासों के कारण भारत की जनसंख्या अत्यधिक तेजी से बढ़ रही है। जनसंख्या जिस रफ्तार से बढ़ रही है, खाद्यान्न के उत्पादन में उतनी तेजी से वृद्धि नहीं हो रही है फलतः भारत में जनाधिक्य की समस्या भयानक होती जा रही है।

माल्थस जैसे अर्थशास्त्रियों के अनुसार बढ़ती हुई जनसंख्या सदैव हानिकारक होती है किन्तु आधुनिक अर्थशास्त्रियों को माल्थस का यह विचार मान्य नहीं है। इस संबंध में Seligman जैसे अर्थशास्त्री का यह कथन बड़ा ही उपयुक्त है - "जनसंख्या की समस्या केवल आकार की ही समस्या नहीं है, वरन् कुशल उत्पादन तथा न्यायोचित वितरण की भी समस्या भी है।" (The Problem of Population is not of mere size but of efficiency production and equitable distribution.) वास्तव में उन अर्थशास्त्रियों के अनुसार बढ़ती हुई जनसंख्या तभी हानिकारक सिद्ध होती है जब किसी देश की जनसंख्या आदर्शतम जनसंख्या से आगे बढ़ जाती है।

P. T. O

क्रमशः

मुद्रास्फीति का वर्गीकरण

शास्त्री - II Part -

मुद्रास्फीति (Inflation) से आशय है मंहगाई। और मंहगाई का मतलब है वस्तु और सेवाओं की कीमत में वृद्धि। उदाहरण स्वरूप - अगर कोई वस्तु कल तक एक रु० में मिलती थी, और आज ज्यादा रुपये में मिलती है तो उस वस्तु के संदर्भ में मंहगाई में उस प्रतिशत की वृद्धि हुई। जिसका तात्पर्य यह हुआ कि कल तक जितनी क्रयक्षमता उस रुपये की थी, अब उतनी क्रयक्षमता ज्यादा रुपये की है। स्पष्ट है कि वस्तु के कीमत स्तर में सर्व प्रथम एक निरंतर होने वाली वृद्धि ही मुद्रास्फीति कहलाती है। जिसके कारण मुद्रा की क्रयक्षमता घट जाती है। मुद्रास्फीति का वर्गीकरण :→

मुद्रास्फीति के कई कारण हो सकते हैं, - मांग और पूर्ति का असंतुलन, वस्तु या सेवा की उत्पादन लागत में होने वाली वृद्धि और आयातित वस्तुओं या सेवाओं की अन्तर्राष्ट्रीय कीमतों या आयात लागत में होने वाली वृद्धि। इनके तहत मुद्रास्फीति (Inflation) का वर्गीकरण तीन श्रेणियों में किया गया है, - (i) लागत जनित मुद्रास्फीति (Cost-Push Inflation) (ii) मांग जनित मुद्रास्फीति (Demand Inflation) (iii) आयातित मुद्रास्फीति (Imported Inflation)

जब वस्तु की कीमत में होने वाली वृद्धि का कारण उसकी लागत में होने वाली बढ़ोत्तरी हो, तो इसे लागत जनित मुद्रास्फीति कहते हैं। वस्तु के उत्पादन की तुलना में उसकी मांग में अधिक वृद्धि के कारण वस्तु के मूल्य में होने वाली वृद्धि को मांग जनित मुद्रास्फीति कहते हैं। यदि उत्पादन में वृद्धि मुद्रा के प्रसार में होने वाली वृद्धि के अनुपात में नहीं होती तो इसकी भी मुद्रास्फीति की स्थिति उत्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त आयातित वस्तुओं के मंहगे होने के कारण उत्पन्न होने वाली मुद्रास्फीति आयातित मुद्रास्फीति कहलाती है। आयातित मुद्रास्फीति अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कीमतों के उछाल के कारण भी उद्भव है और Dollar के सापेक्ष रुपये की गिरावट से होने वाली गिरावट के कारण भी।

R. K. S. College Sunder Sare.

6/10/20

शास्त्रा – I st.

सीमांत उपयोगिता में ह्रास क्यों होता है?
(Why does Marginal utility decline?)

उत्तर – सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम के अनुसार जैसे-जैसे किसी वस्तु की मात्रा उसके पास बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे उसकी सीमांत उपयोगिता क्रमशः घटती जाती है। अर्थात किसी वस्तु की प्रत्येक नई इकाई के उपभोग से घटती हुई उपयोगिता प्राप्त होती है। परन्तु उपयोगिता में क्रमशः कमी कभी नहीं होती है इसके दो महत्वपूर्ण कारण हैं:

(1) सीमांत उपयोगिता में ह्रास का पहला प्रमुख कारण यह है कि प्रत्येक आवश्यकता विशेष की संतुष्टि की जा सकती है। एक जीवन में मनुष्य की आवश्यकताएँ इतनी नहीं हैं कि जिनकी पूर्ति से संतुष्टि न हो सके। इसका कारण यह है कि हमारे उपभोग करने की क्षमता है और किसी वस्तु के लिए हमारी आवश्यकता कितनी भी तीव्र क्यों न हो उस वस्तु के उपभोग से संतुष्ट किया जा सकता है। और ज्यों-ज्यों उस वस्तु की आवश्यकताओं की संतुष्टि होती जाती है, त्यों-त्यों उस वस्तु के लिए हमारी उपयोगिता भी घटती जाती है। उदाहरण के लिए भूखे व्यक्ति के लिए रोटी की आवश्यकता बहुत ही तीव्र थी, किन्तु पहली रोटी से उसकी तीव्रता कुछ कम हो गयी, दूसरी रोटी से तीव्रता और भी कम हो गयी, और इस प्रकार तीसरी, चौथी, पाँचवी रोटी से उनकी तीव्रता क्रमशः घटती जाती है, अतएव इन इकाइयों से वह क्रमशः घटती हुई उपयोगिता का अनुभव करेगा। (2) सीमांत उपयोगिता में ह्रास का दूसरा प्रमुख कारण यह है कि वस्तुएँ पूर्णतया एक दूसरे के स्थान पर व्यवहृत करने योग्य नहीं होती हैं। वे अपूर्ण भी हैं। उदाहरण के लिए दूध एवं रोटी अनुपात में ही उपभोग की जाती है। उपयोगिता के लिए दोनों वस्तुओं का एक साथ ही लिया जाना आवश्यक है। अगर आधे रोटी का उपभोग करें निश्चित अनुपात में उपभोग आवश्यक है। अगर आधे रोटी का उपभोग करें या दूध का उपभोग करें तो केवल दूध का उपभोग किया जाए या दूध का उपभोग करें तो केवल रोटी का उपभोग किया जाए तो पूर्ण संतुष्टि नहीं होगी, क्योंकि हम केवल रोटी का उपभोग किया जाए तो पूर्ण संतुष्टि नहीं होगी, क्योंकि हम अवश्य ही क्रमशः रोटी अथवा दूध के अभाव का अनुभव करेंगे। आधे बिना भोजन के अनुभव किये ही केवल दूध का उपभोग किया जा सकता है तो दूध की उपयोगिता में ह्रास नहीं होगा। इसी प्रकार आधे बिना भोजन के अनुभव किये ही केवल रोटी का उपभोग किया जा सकता है तो रोटी की उपयोगिता में कमी नहीं होती। इनकी उपयोगिता में कमी का सही कारण है कि ये पूर्ण रूप से एक दूसरे के स्थान पर व्यवहृत नहीं की जाने जा सकती हैं। दैनिक जीवन के प्रत्येक में आने वाली प्रायः सभी वस्तुओं के साथ यह बात पायी जाती है। इस प्रकार सीमांत उपयोगिता में ह्रास का एक प्रमुख कारण यह होता है वस्तुएँ पूर्ण रूप से एक दूसरे के स्थान पर व्यवहृत करने योग्य नहीं होती हैं तथा इनका उचित अनुपात में ही उपभोग किया जाता है।

R.U.S. College Sunheena 6/10/20 Mamta